International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org October- 2016, Volume-3, Issue-5 Email- editor@ijesrr.org

# अरविन्द घोष के राष्ट्रवाद का मूल्यांकन

**AZIZUL HASAN**
Research Scholar
Sunrise University, Alwar
Rajasthan

**Dr. ANUP PRADHAN**
Supervisor
Sunrise University, Alwar
Rajasthan

**सार–**

भारत के शाश्वत प्रकाश–स्तम्भों में श्री अरविन्द की श्रेष्ठता निर्विवाद है। वे एक शिक्षाविद्, क्रांतिकारी राष्ट्रनेता, द्रष्टाकवि, समाज–चिंतक, आध्यात्मिक दर्शन के प्रणेता एवं समग्र मानवजाति के सुहद्व थे। इन सभी क्षेत्रों में अग्रणी रहते हुए भी वे सर्वप्रथम मुख्य रूप से उच्चतम कोटि के ऋषि, योगेश्वर एवं जगद्गुरू थे। युग–प्रवर्तक के रूप में वे पृथ्वी पर दिव्य जीवन के सृजन हेतु अवतरित हुए थे।

**प्रस्तावना–**

कृष्ण जन्माष्टमी के दिन 15 अगस्त 1872 ई0 को कलकत्ता नगर में श्री अरविन्द का जन्म हुआ। श्री अरविंद डॉ0 कृष्णधन घोष एवं श्रीमती स्वर्णलता देवी के तृतीय पुत्र थे। विनयभूषण और मनमोहन इनके बड़े भाई थे और सुविख्यात क्रांतिकारी वारीन्द्र घोष तथा सरोजिनी इनके छोटे भाई–बहन थे। अरविन्द नाम कृष्णधन का ही आविष्कार था। अरविंद का अर्थ है–कमल, इसका आध्यात्मिक अर्थ है–भागवत चेतना, यह अर्थ चमत्कारिक रूप से श्री अरविन्द की प्रकृति से मेल खाता था क्योंकि वे शान्त, सौभ्य और दृढ़ निश्चयी थे। अरविन्द के पिता व्यवसायिक रूप से डॉक्टर थे। वे ऊँचो डिग्री प्राप्त करने के लिए एवरडीन–स्काटलैण्ट गये थे। उस समय अगर कोई हिन्दू काला पानी (समुद्र) पार करके कहीं जाता था जो उसे जाति से बाहर कर दिया जाता था। आजकल किसी हिन्दू को ,मुसलमान या ईसाई के समान ही कोई रूकावट नहीं है। इसके बाद भी कृष्णधन ने कलकत्ता के मेडिकल कॉलेज की परीक्षा पास करके काला पानी पार किया। वे उन प्रथम लोगों में से थे जो उच्चतर पढ़ाई के लिए कलकत्ता से बाहर गये थे।

जब कृष्णधन एवरडीन से एम0डी0 की डिग्री लेकर लौटे तब वे पक्का साहिब बन चुके थे। उनके भोजन के तौर–तरीके, उनकी वेशभ्षा और बात–व्यवहार पूरा इंग्लिशतानी था। उस समय शिक्षित भारतीयों की धारणा थी कि यदि भारत को महान बनाना है तो अंग्रेजों की नकल करना चाहिए। कृष्णधन के घर के दरवाजे गरीबों की मदद के लिए हमेशा खुले रहते थे। अरविन्द पाश्चात्य वातावरण में बड़े होन लगे।

श्री अरविन्द के बाल्यकाल और प्रारभिक युवाकाल के लगभग चौदह वर्ष विदेश में, (इग्लैंड में), बीते, युवाकाल के शेष वर्ष गुजरात में। वहाँ भी उनका एक प्रकार से विदेशवास जैसा ही रहा। वे अपनी जन्मभूमि कलकत्ता में केवल तीन या चार वर्ष ही रहे। इनमें से एक वर्ष तो कारावास में ही बीत गया। जीवन का बाकी समय पांडिचेरी में बिताया।

जब अरविन्द पाँच वर्ष के थे तभी उनके पिता ने तीनों भाइयों को दार्जिलिंग के लौरेटो स्कूल में भेज दिया। यह एक मिशनरी स्कूल था जिसमें सभी विद्यार्थी अंग्रेजों के परिवार के थे। कृष्णधन की एक मात्र यही इच्छा थी कि उनके बच्चे अंग्रेजों की संगति में बड़े होकर पूरे 'साहिब' बनकर निकले। इसी उम्र में श्री अरविन्द को अपने परिवार से अलग रहने का अभ्यास होता गया। वे बहुत अध्ययनशील, सुव्यवहारिक और मधुर प्रकृति के थे।

सन् 1879 में जब श्री अरविन्द की आयु 7 वर्ष की थी तभी डॉ0 कृष्णधन घोष पत्नी सहित बच्चों को लेकर इग्लैंड गये। अपने पुत्रों एवं पत्नी को एक अंग्रेज पादरी और उनकी पत्नी को इस निर्देश के साथ सौंप दिया कि बच्चे किसी भारतीय से कोई परिचय प्राप्त न कर सकें और उन पर किसी प्रकार का कोई भारतीय प्रभाव न पड़ने पाये। इस प्रकार अरविन्द भारत, उसके निवासियो, उसके धर्म और उसकी संस्कृति से सर्वथा अनभिज्ञ होकर पलते रहे।

श्री अरविन्द के दोनों भाईयों को मैनचेस्टर ग्रामर स्कूल में प्रवेश कर दिया गया परन्तु अरविन्द छोटे होने के कारण ड्रएट के घर पर ही रहते। ड्रएट स्टाकपोर्ट रोड चर्च के पादरी थे, जो आजकल आक्टागोनल चर्च के नाम से जाना जाता है। श्री अरविन्द को पादरी ड्रएट और उनकी पत्नी ने घर पर ही पढ़ाना शुरू किया। श्रीमती ड्रएट उन्हें इतिहास, भूगोल, गणित एवं फ्रेंच पढाती थी। श्री अरविन्द ने प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात खाली समय में बायबिल तथा शैक्सपियर, शैली, कीट्स आदि की कृतियों का अध्ययन शुरू किया।

श्री अरविन्द इग्लैण्ड में अरविन्दा एक्रॉयड घोष के नाम से जाने जाते थे। वास्तव में जब श्री अरविन्द का जन्म हुआ उसी समय कुमारी ऐनेट ऐक्रॉयड नाम की महिला भारत आयी थी। श्री अरविन्द के पिता अंग्रेजी प्रथाओं के प्रेमी थे ही। उन्होंने अरविन्द के नाम से आगे कुमारी ऐनेट का कुलनाम एक्रायड जोड़ दिया। इग्लैंड में अपनी शिक्षा पूरी करके वहाँ से लौटते समय तक यही नाम चलता रहा। आध्यात्मिक तपस्या के समय वह केवल ए0 जी0 रहे, यद्यपि अपने कुछ पत्रों में वह अपने हस्ताक्षर 'काली' करते थे जिसका अर्थ था श्रीकृष्ण की शक्ति।

1885 में अरविन्द लन्दन में सेंट पाल में भेज दिये गये। सन1884 से 1889 ई0 तक पाँच वर्ष तक वह सेंटपाल में रहे, जहाँ उन्होंने प्राचीन भाषाओं में काफी योग्यता प्राप्त की आर अनेक पुरस्कार पाये उन्होंने अपना बहुत समय अंग्रेजी साहित्य, कविता और उपन्यास, फ्रांसीसी साहित्य और प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक यूरोप के इतिहास की पुस्तकें के अध्ययन में बिताया। उन्होंने इटालीस, जर्मन एवं स्पेनीज भाषा सीखने में भी समय लगाया।

अरविन्द क पिता ने कड़े निर्देश दे रखे थे कि उनके बच्चों को कोई धार्मिक उपदेश नहीं दिये जायें। बड़े होने पर वे अपने आप ही (इस संबंध में) अपनी पसन्द और निर्णय का प्रयोग करेंगे। सेन्टपाल के हेडमास्टर डॉ0 वाकर ने अरविन्द को ग्रीक भाषा में सहायता की। अरविन्द न 1889 में एक वाद–विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया जिसका शीर्षक था ''स्विफ्ट के राजनीतिक विचारों में असंगति'', इस विषय पर हुई वाक प्रतियोगिता में उन्हें बहुत प्रशंसा मिली। उन्हें सहित्य में दूसरा 'बटर बर्थ' पुरस्कार मिला और इतिहास में बेडफोर्ड पुरस्कार। अतिम एन्ट्रेंस परीक्षा में उन्हें 'स्कालरशिप' दिया गया जिससे उन्हें केम्ब्रिज के किंग्स कॉलेज में प्रवेश मिलना आसान हो गया। श्री अरविन्द ने 20 वर्ष की आयु से पूर्व ग्रीक और अंग्रेजी भाषाओं पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया था तथा जर्मन, फ्रेंच, इटेलियन जैसी अन्य य्रोपीय भाषाओं का भी परिचय प्राप्त कर लिया था। श्री अरविन्द का विदेश–निवास केवल उनकी बौद्धिक शिक्षा का काल ही न था इस जीवन का एक दूसरा पहलू भी था और वह था अभावों का अनुभव। हम सोचते हैं कि वे एक धनी पिता के पुत्र थे इसलिए वे संतोष, ऐश, आराम के साथ समृद्धि का जीवन बिताते होंगे, जबकि उनके पिता उनकी सभी जरूरी आवश्यकताएं भी पूरी नहीं कर पाते थे।

अपनी असाधारण प्रतिभा के साथ लंदन की पढ़ाई पूरी करके अरविन्द केम्ब्रिज गये। उन्होंने आई0सी0एस0 की प्रवेश परीक्षा भी विशेषतापूर्वक पास की। केम्ब्रिज में वे दो साल रहे। आई0सी0एस0 में घुड़सवारी परीक्षा में शामिल न होने के कारण उन्हें असफल घोषित कर दिया गया। सन् 1892 में अरविन्द ने केम्ब्रिज छोड़ दिया और लंदन आ गये। आई0सी0एस0 त्यागने का असली कारण अरविन्द का मातृ भूमि के प्रति प्रेम था। इतनी छाटी उम्र में आई0सी0एस0 जैसा पुरुस्कार ठुकरा देना भी साधारण बात नहीं थी।

इक्कीस वर्ष की आयु में चौदह वर्ष विदेश रहने के बाद अरविन्द 1893 में स्वदेश लौटे। उन्हें पिता की मृत्यु के विषय में जानकारी नहीं थी और उनकी माँ की मानसिक अवस्था भी उनसे गुप्त रखी गयी थी वे कितनी उत्सुक आशायें और अभिलाशाएं लेकर अपने देश वापिस आ रहे थे। एक तरफ गहरा शोक उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। दूसरी तरफ एक लम्बी अवधि तक विदेश में रहने के बाद मातृभूमि वापिस आने की गहरी प्रसन्नता थी।

सन् 1893 भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण वर्ष है। इसी वर्ष स्वामी विवेकानन्द शिकागो के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने अमेरिका गये और श्री अरविन्द घोष इग्लैंड से अपनी शिक्षा प्राप्त कर भारत आये। इतिहास का अदभुत मिलन था। एक पाश्चात्य जगत को भारतीय धर्म एवं संस्कृति के प्राचीन गौरव की दीक्षा देने के लिए पश्चिम की ओर बढ़ रहा था दूसरा भारत माँ को दासता के बन्धन से छुड़ाने के लिए नयी विचारधारा, नई कार्य पद्धति और नये अनुभव के साथ पूर्व की ओर आ रहा था। दोनों का लक्ष्य एक ही था– भारत माँ की प्राचीनता को संसार के समक्ष गौरवमयी गरिमा के साथ प्रस्तुत करना । एस0 एस0 कार्थगे जहाज अरविंद को लिए हुए निर्धारित तिथि 6 फरवरी 1893 को बम्बई पहुँचा। भारत माता ने अपने पुत्र का स्वागत एक आश्चर्य जनक नये ढंग से किया। भूमि का स्पर्श करते ही उन्हें एक अपूर्व अनुभूति हुई। कैम्ब्रिज में अरविंद के तीन क्रियाकलाप थे–ट्राइपोस और आई0सी0एस0 परीक्षाओं की तैयारी, इंडियन मजलिस नामक संस्था के कार्यों में सक्रिय भाग लेना और कविताएं लिखना।

इस प्रकार श्री अरविन्द के बाल्यकाल एवं प्रारम्भिक शिक्षा पर दृष्टिपात करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि उनका बाल्यकाल संघर्षों से पूर्ण या क्योंकि जिन परिस्थितियों में उन्होंने अपनी शिक्षा को चलाया था उसमें एक आम व्यक्ति द्वारा एक साथ चलाया जा सकना असम्भव था। अपने वजीफे के द्वारा वह अपना खर्च ही नहीं चलाते थे बल्कि अपने दोनों भाईयों का भी खर्च चलाते थे।

आधुनिक भारत के इतिहास में राष्टोय आन्दोलन एक बहुत ही रूचिकर एवं विशिष्ट प्रकार का विषय माना गया है, जिसका अध्ययन करने में भारतीय इतिहासकारों ने काफी दिलचस्पी दिखाई है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में कुछ ऐसे अदभुत एवं महान व्यक्ति का योगदान रहा, जिनकी गणना विश्व के महानतम व्यक्तियों में की जाती है। ये व्यक्ति इतिहास में उग्र विचार को मानने वाले कहे गये। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान एक विदेशी साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष के साथ–साथ नई चेतना के दौर का विकास तेजी से हुआ।

अरविन्द घोष बचपन से ही पाश्चात्य विचारों, सभ्यता एवं रहन–सहन में पले थे, परन्तु भारत के प्रति उनका असीम प्यार था। उन्होंने देश के राजनीतिक वातावरण का अध्ययन किया एवं सक्रिय राजनीति में भाग लिया। उनके लेख भारतीयां में राष्ट्रीयता की भावना भरने में सफल हुए। इग्लैंड में रहते हुए वे अनेक गुप्त क्रान्तिकारी संस्थाओं से जुड़ गये थे। उन्होंने आई0सी0 एस0 की परीक्षा में जानबूझ कर घुड़सवारी की परीक्षा में हिस्सा नहीं लिया और यह दिखाया कि वे अंग्रेजों के गुलाम बनकर नहीं रहेंगे।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यक्रम से असंतुष्ट थे इसलिए उन्होंने हिंसक क्रान्ति के माध्यम से स्वराज प्राप्त करने की योजनाएं बनायी। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन मं अरविन्द ने उग्र राष्ट्रवाद को वरीयता दी। वे अध्यापक से राष्ट्रीय नेता, पत्रकार, शिक्षाविद और क्रांतिकारी आन्दोलन के संचालक बने।

सक्रिय राजनीति में उनकी सबसे बडी देन राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रारम्भ थी, जा बंग विभाजन के आन्दोलन से प्रारम्भ होकर स्वराज्य के रूप में मुखर हुईं। श्री अरविंद ने एक ऐसी ज्वाला प्रज्वलित की जो अल्पकाल में अपना कार्य पूरा कर गयी और बाद में श्री अरविन्द क्रांन्तिकारी गतिविधियों का त्याग कर अध्यात्मिकता का पुर्नजीवित करने के लिए पांडिचेरी चले गये। उन्होंने महाराष्ट्र के क्रातिकारी आन्दोलन और बंगाल की गुप्त क्रांतिकारी समितियों को एक दूसरे के नजदीक लाने में महत्वपूर्ण योग दिया, जिससे राष्ट्रीय स्तर पर एक व्यापक आन्दोलन छेड़ा जा सके।

अरविन्द एक जन्मजात क्रांतिकारी थे। भवानी मंदिर में उनके विचारों स स्पष्ट होता है कि बंगाल विभाजन के समय वह एक ऐसा संगठन बनाना चाहते थे जो भारत के आध्यात्मिक विकास के साथ–साथ उसमें उग्र राष्ट्रीयतावादी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए उसका, विदेशी दासता से मुक्त भी करा सके। भारत को आजादी मिलेगी इस बारे में पूर्ण आश्वस्त होकर वह पांडिचेरी में साधना के लिए गये। इसका लक्ष्य था देश को राजनीतिक रूप में जाग्रत करने के बाद उसकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए चिन्तन और साधना ।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. दिनकर, रामधारी सिंह : ''चेतना की शिला'', पटना, उदयाचल 1973।
2. बेसेन्ट, एनी : ''हाउ इण्डिया रोट फॉर फ्रीडम'' मद्रास 19915
3. नारायण इकबाल : ''राष्ट्रीय आन्दोलन तथा भारतीय संविधान'' इन्दौर, 1981, प्र0 संस्करण।
4. श्री अरविन्द : ''नवजात'', नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 1978।
5. वाचस्पति, इन्द्र विद्या : ''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास'', सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली 1960 ।
6. सत्य–भक्त : ''क्रान्ति पथ के पथिक'', 1973 प्रकाशक बेलनगंज, आगरा।
7. सीतारामय्या पट्टाभि : ''कांग्रेस का इतिहास'' प्रथम खण्ड, 1885–1935, नयी दिल्ली 1949।
8. सिंह, शिव प्रसाद : 'उत्तर योगी', प्रथम संस्करण, इलाहाबाद–1972
9. श्री अरविन्द : कर्मधारा, अंक 9, सितम्बर–1973।
10. श्री अरविन्द : ''लविंग होमेज'' पाठ मन्दिर, कलकत्ता, 1958।